आया गांव गिररी में डेरा हुआ। नाड़राव ने पाटवे में डेरा किया सोजत के हुल (राजपूतों की १ जाति) आगे हुवे। उस दिन बड़ी लड़ाई हुई। चांग (मेरवाड़ा) कामेर परबत जो नाड़ाराव का चाकर था खूब लड़ा ५०० आदमियों से काम आया।

दूसरे दिन पृथ्वीराज चोहान और नाड़राव पड़िहार मैदान में आकर लड़े। पृथ्वीराज के २१ घाव लगे, नाड़राव का बहुत साथ (लशकर) मारा गया, पृथ्वीराज जीता, नाड़राव भागा, उस से कुछ बन नहीं पड़ा। ५ं आदमियों को इकट्ठा किया कि अब तो बेटी देनी ही पड़ेगी। पृथ्वीराज वहीं व्याहा नाड़राव आकर पैरों में पड़ा चाकर हुआ। पृथ्वीराज डोला और नाड़राव के २ बेटों को साथ लेकर अजमेर गया। नाड़राव के बेटे पृथ्वीराज के सावंत हुवे।

१ पड़हार मोवणसी, पृथ्वीराज पकड़ा गया जब काम आया।

२ पड़हार अल्ह कन्नौज की लड़ाई में काम आया।

नाड़ का भाई पीपा भी सावंत हुआ। १ बार उस ने शहाबुद्दीन को पकड़ा था फिर जब पाटण (गुजरात) का राजा भोला भीमदेव कटक ले कर आया और पृथ्वीराज ने "दाहमा केवास" को फ़ौज दे कर भीमदेव पर बिदा किया तो परगने सोजत के गांव धणले

में लड़ाई हुई। वहां नाड़राव काम आया। पृथ्वीराज ने मंडोवर मोवणसी और अल्ह को दे दी।

फिर जब पृथ्वीराज को संवत ११५५ (१) में शहाबुद्दीन ने पकड़ा तो मोवणसी काम आया।

फिर दिल्ली पृथ्वीराज के बेटे रतनसी को मिली। पृथ्वीराज के मरे पीछे रतनसी ने १८ वर्ष तक दिल्ली भोगी। पीछे शहाबुद्दीन का बेटा सुलतानशाह गजनी के तख़्त पर बैठा और दिल्ली के ऊपर आया, रतनसी ने कोट पकड़ा। चोहान कन्न नरनाह का बेटा ईसरदास बड़ा राजपूत था जिस ने बड़ी लड़ाइयां कीं। रतनसी और ईसरदास बहुत से आदमियों से काम आये फिर सुलतानशाह कनौज पर गया। राजा जेचंद ने गंगा में प्रवेश किया तब तुरकों ने सारी धरती ले ली। संवत् १३७३ में शाह की फ़ौज ने पड़िहारों से मंडोवर छीन ली तुरकानी हुई।

नाड़राव के जन्म की कथा।

पड़िहार नागार्जुन के बेटा नहीं होता था। तब १ जोगी सिद्ध आया। राजा ने बहुत सेवा की, जोगी राज़ी हुआ और बोला क्या चाहते हो। राजा ने कहा मेरे बेटा नहीं है। जोगी ने कहा कि मैं २ फल दूंगा और उन में से १ लेलूंगा राजा ने कबूल किया। जोगी

---

(१) यह संवत् अशुद्ध है।

ने ३ आम दिये जिन से ३ बेटे हुवे। जोगी १० वर्ष पीछे फिर आया तो ३ बेटे देखे और नागार्जुन से मिला। रानियों ने सुना कि जोगी आया है नाड़राव की मां ने जाना कि अच्छा बेटा मेरा ही है जोगी ले लेगा इसलिये नाड़ंसर में लेजाकर नाड़राव को छुपा दिया। जोगी भी पीछे २ आया। तब उस की मां अजमेर में ले गई। नाड़राव बड़ा होकर अजमेर के धणी का नोकर हुआ, मुजरे में पहुंचा, गांव पाया। जोगी वहीं आकर पहाड़ी पर रहा और नाड़राव से कहलाया कि १ बार रोज़ मेरे पास आया कर। दिवाली के दिन तेल का कढ़ाव चढ़ाया था। नाड़राव अजमेर से आधी रात को गया। जोगी ने कहा कि इस के आस पास परिक्रमा दे। परिक्रमा देते हुवे नाड़राव को जोगी कढ़ाव में डालने लगा मगर उस ने जोगी को ही कढ़ाव में डाल दिया, इस हत्या से कोढ़ हो गया, बदन गलने लगा। फिर नाड़राव मंडोवर का मालिक हुआ। वहां १ बाराह आकर बाड़ी का बिगाड़ कर जाता। माली ने नाड़राव से पुकारा कि नाड़राव १ दिन ओदी में बैठा। बाराह निकला, नाड़राव उस के पीछे हुवा, बाराह पोकर जी की जगह पहुंचा, मुंह और पांवों से १ खड्डा खोद कर उस में अलोप हो गया। नाड़राव खड्डे में पानी देख कर उतरा और नहाया तो कोढ़ जाता रहा। तब उस ने

पुसकर जी का कुंड बंधाया, बाराह जी का देहरा बनाया।

नाड़राव ने मंडोवर का किला और कोट भी बनाया था।

नाड़राव का बेटा रघु, उस का गांगेव, गांगेव का देपालदे, और देपालदे का मेहा हुआ, मेहा का बेटा खाखू था।

खाखू पड़िहार।

खाखू बड़ा राजपूत हुआ। इस की ठुकराई गांव घटियाले में थी। इस ने तुर्कों को लड़ाई में हरा कर चामुंडा माता को बहुत बड़ी भेंट चढ़ाई थी और उन के बरदान से पत्थर की १ बड़ी चाट पर तलवार मार कर २ टुकड़े कर दिये थे जो अब तक मौजूद हैं। फिर धूंधली धमाल जोगी के सराप से घटियाला उलट कर ऊजड़ हो गया।

सूर पड़िहार।

खाखू की बहन आबू पहाड़ पर ब्याही थी। वह उजड़ने से पहिले घटियाले में आकर खाखू के बेटे सूर को लेगई और अपने बेटे को वहां छोड़ गई थी।

सूर फूफी के पास बड़ा हुआ वहीं उस की शादी हुई उस का बेटा ईंदा हुआ।

ईंदा पड़िहार।

ईंदा ने मारवाड़ में आकर अपनी जमीन फिर

बसाई। इस के ५ बेटे गोपाल, बीजल, धड्ड, गाहड, और गोढोराज थे।

इस के पीछे का हाल आगे ईंदाशाखा के वृत्तांतों में लिखा जावेगा।

टाड राजस्थान के पहिले भाग से—

अग्निवंश की उत्पत्ति।

टाड राजस्थान के पहिले भाग के ७ वें बाब में जो कथा अग्निकुल की उत्पत्ति की लिखी है उस में पड़िहार जाति का वर्णन संक्षेप रूप से यह है कि आबू के पवित्र पर्वत पर ऋषि मुनि जो यज्ञ करते थे उस की सामग्री को दैत्य और राक्षस लूट ले जाते थे और यज्ञस्थान को भी रुधिर, मांस, और अस्थि की वर्षा कर के अपवित्र कर देते थे तब उन्हों ने फिर पवित्र अग्नि का आवाहन किया और महादेव जी से प्रार्थना की कि हमारी सहायता करो।

अग्निकुंड से १ पुरुष प्रकट हुआ जिस का मुखारविन्द योधाओं का सा नहीं था, इसलिये ब्राह्मणों ने उस का नाम प्रतिहार (पड़िहार) रखा। फिर इसी तरह चालुक्य और परमार अग्नि में से निकले और ये तीनों दैत्यों से लड़ने को भेजे गये परन्तु उन के सामने न ठहर सके।

फिर वशिष्ठ ने अग्निकुंड पर बैठ कर मंत्र पढ़े

और देवताओं से फिर सहायता मांगी तो तुरुंतही चौहान उत्पन्न हुवा और उस ने दैत्यों को मारा।

पड़िहार और मंडोर।

प्रतिहार वा पड़िहार अग्निकुल में सब से पीछे और कम दरजे पर है। हम इस का वर्णन बहुत कुछ नहीं कर सकते। रजवाड़ों के इतिहास में यह कुछ प्रसिद्ध भी नहीं है। सदा से छोटे दरजे पर रहा और दिल्ली के तंवरों तथा अजमेर के चौहानों का हुक्म उठाया किया। इस जाति की ख्यात में नाहरराव विख्यात है, जिस ने पृथ्वीराज की आधीनता से निकलना चाहा और सफल मनोरथ न हुआ तोभी उस का नाम अमर हो गया और आड़ावला पहाड़ का वह घाटा भी जहां यह लड़ाई हुई थी प्रसिद्ध हुआ।

मंडोर जिस को मंदोद्री भी कहते हैं पड़िहारों की राजधानी थी। यह सुविख्यात नगरी जो मारवाड़ में है राठौड़ों की चढ़ाई सैं पहिले पड़िहारों के आधीन थी। यह जोधपुर से ५ मील उत्तर में है। इस में पाली के पुराने अक्षरों के नमूने और जैनमंदिरों की टूटी हुई मूर्तियां अब भी विद्यमान हैं।

कन्नोज के राठौड़ राजा अपना स्थान छोड़ कर पड़िहारों के शरणागत हुवे परन्तु उन्हों ने शरण देनेवालों से छल कपट किया और बुरा बर्ताव बरता.

चूँडा * ने जो राठौड़ों के इतिहास में प्रसिद्ध है, मंडोर के किले पर अपना अधिकार किया और पड़िहारों के अंतिम राजा का राज्य छीन लिया।

पड़िहारों का बल और अधिकार तो पहिलेही मेवाड़ के राजाओं की चढ़ाइयों से घट गया था क्योंकि उन्हों ने इन के बहुत से परगने छीन लिये थे और उन की राना पदवी भी लेली थी। पड़िहार बिखर कर सब रजवाड़ों में चले गये। मैं नहीं जानता कि कोई स्वतंत्र राजा वा राज्य वहां अब भी है कि नहीं। कोहारी और चंबल नदी के संगम पर १ नई बस्ती इस जाति की विद्यमान है और २४ गांव जो उन नदियों के नालों खोलों में इन के रहने के हैं वे इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हैं, जो नाममात्रही सिंधिया के आधीन थे, परन्तु चंबल का रास्ता चलू रखने के लिये यह उचित समझा गया कि वे अंग्रेज़ी सरकार में आजावें और इसी से ठगों का वह दल जो ठगों के इतिहास में प्रख्यात है अंग्रेज़ी सरकार का आधीन हो गया।

पड़िहार की १२ शाखायें हैं जिन में प्रसिद्ध ईंदा और सिंधल † हैं इन्हीं में के कुछ लोग लूनी नदी के किनारों पर रहते हैं।

---

* चूंडा ने पड़िहारों से मंडोर नहीं लिया ईंदा शाखा के पड़िहारों ने मुसलमानों से ले कर चूंडा को दिया था।

† सिंधल पड़िहार नहीं हैं राठौड़ हैं।

दूसरे भाग से—

पड़िहार और राठौड़।

कन्नौज के राजा जयचंद का पोता सियाजी राठौड़, जयचंद से कन्नौज का राज छूट जाने के १८ वर्ष पीछे संवत् १२६८ में २०० विख्यात राजपूतों को लेकर गुजरात जाता हुआ मारवाड़ में आया। उन दिनों में राना मानसी पड़िहार जो ईंदा शाखा में था, मंडोवर का राजा बना हुआ था और आसपास के भोमिये उस को जंगल का बड़ा राजा मान कर हुक्म उठाते थे। उस से आगे पश्चिम में लूणी नदी के आस पास गोयल जाति के राजाओं का राज खेड़ में था।

सियाजी ने गोयल राजा महेश दास को मार कर खेड़ छीन लिया। कोई कहते हैं कि यह काम उस के बेटे अश्वत्थामा (आस्थान) ने किया था।

आस्थान का बेटा धूहड़ पड़िहारों से मंडोवर छीन लेने को गया था मगर लड़ाई में खेत रहा।

धूहड़ के बेटे रायपाल ने बाप के बैर में पड़िहारों को मारा और कुछ दिनों तक मंडोवर में राज किया।

रायपाल से ७ वीं पीढ़ी में बीरम के बेटे चूंड़ा ने अपनी जाति की सब शाखाओं के राठौड़ों को इकट्ठा करके मंडोवर पर धावा किया और पड़िहार राजा

को मार कर कन्नौज का झंडा मारवाड़ की राजधानी पर चढ़ा दिया।

चूंड़ा राठौड़ ईंदा शाखा की १ राजकुमारी को व्याहा था, जिस के बाप को यह मोद आया कि उस का दोहिता मंडोवर की गद्दी का मालिक बना।

उर्दू तवारीख गुलदस्ते कन्नौज से—

पड़िहार राजा कृपाल और पृथ्वीराज चौहान।

महोबे के राजा परमाल कन्नौज के महाराजा जैचंद का प्रधान मंत्री था। उस के पास लोग पारस पत्थर बताते थे। पृथ्वीराज चौहान ने मारवाड़ के राजा कृपाल * को उस के पास से पारस पत्थर और दूसरे ही कीमती जवाहरात लाने के लिये महोबे पर भेजा, मगर वह लड़ाई में हार कर भाग आया। पृथ्वीराज ने फिर फौज़ देकर उसी को उधर भेजा। इस-वार परमाल हारा, कृपाल जीता। बहुत सा माल खजाना उस को लूट में मिला पर वह पारस हाथ नहीं

* यह कौन कृपाल था और किस का बेटा। इस का कुछ उल्लेख गुल-दस्ते कन्नौज में नहीं है। और वंशभास्कर की पीढ़ियों में जो कृपाल नंबर १८५ पर लिखा है वह पृथ्वीराज से बहुत पीछे हुआ है ऐसा उसी ग्रन्थ से जाना जाता है क्योंकि पृथ्वीराज का समकालीन नाहर राव उस ग्रन्थ में नं० १७१ पर लिखा है। भाटों की लिखी हुई पीढ़ियों का यह उलझाव कभी किसी विद्वान से सुलझनेवाला नहीं है क्योंकि भाट लोग अपनी दंतकथाओं के सिवाय न तो इतिहास को जानते हैं और न जानने की चेष्टा करते हैं।

आया। उस लड़ाई में परमाल के २ सूरमा सावंत-बच्छराज और बैसराज मारे गये थे। कुछ दिनों पीछे बच्छराज के आला, ऊदल, और बैसराज के लड़के सलखान और मलखान, जो परमाल राजा की देख-भाल में बड़े सिपाही और लड़ाका हो गये थे फौज सज कर मारवाड़ पर चढ़े और वहां के राजा को बाप के बैर में मारकर बहुत सा धन माल लूट लेगये।

मेवाड़ के संक्षेप इतिहास से—

राना मोकल पड़िहार और रावल करन।

उदयपुर राजवंश के वृहत इतिहास बीरविनोद से मेवाड़ के संक्षिप्त इतिहास में लिखा है कि सुलतान अलाउद्दीन के चितोड़ जीत * लेने के पीछे रावल रतन सिंह का बेटा करण सिंह पहाड़ों में जा रहा था उस समय मंडोर का राना मोकलसी पड़िहार पिछले बैर से रावल के कुटुम्बियों पर धावा करने लगा, तब रावल का छोटा बेटा राहप बाप के कहने से मोकल को पकड़ ले गया, रावल ने उस की राना पदवी छीन कर राहप को देदी और उस को छोड़ दिया।

माधवप्रकाश में पड़िहार।

माधव प्रकाश में जहां आमेर के कछवाहा राजा जान्हड़ देव के (जो पृथ्वीराज चौहान से कुछ पहिले हुआ

* यह घटना संवत् १३६० में हुई थी।

है, इस का बेटा राजा पजोनी पृथ्वीराज के सामंतों में था) ७१ समकालीन राजाओं के नाम लिखे हैं वहां ये ३ पड़िहार भी थे।

नं.	नाम राजा	राज्य
१	तारम	भटनेर
२	सारंगधर	सोजत
३	आल्हण	जेतारण

भटनेर अब बीकानेर राज्य में है जिस को हनुमाननगढ़ कहते हैं सोजत और जेतारण दोनों जोधपुर के नीचे हैं।

नाड़राव का थान।

नाड़राव का थान मंडोर के किले पर १ तहखाने में है जिस में दो तीन कुंजगलियां हैं और रास्ता भी १ कुंजगली में होकर है। इन सब कुंजगलियों में बहुत अंधेरा रहता है दोपहर को १ जाली में से धूप की किंचित् झांई पड़ती है, उसी से कुछ दिखाता है। यहां नाड़राव का पुजारी जो १ माली * है रोज झाडू देकर चार जगह फूल चढ़ाता है और धूप करता है। १ जगह तो जहां दीवार पर बहुत सा सिंदूर और मालीपन्ना लिसा हुआ है, नाड़राव की कहलाती है। कहते हैं कि नाड़राव मुसलमानों से लड़ाई हारकर यहां आ छिपा था। १ रानी १ लड़का और १ छोटा भाई उस के साथ

* टाड राजस्थान में नाई पुजारी लिखा है सो कदाचित् टाड के समय होगा अब तो माली है।

था। जब मुसलमान उस के मारने को यहां भी आपहुंचे तो उस ने पहिले अपनी रानी को मारा फिर आप भी मारा गया, दूसरे कोने में उस के भाई और बेटे भी कतल हुए। नाड़राव के पीछे ही १ कुंजगली में उस की रानी के नाम पर फूल चढ़ते हैं। यहीं लेट कर जाना पड़ता है और तीसरी कुंजगली में नाड़राव के बराबर उस के भाई और बेटे के नाम से फूल रखे जाते हैं।

नाड़राव देवता माना जाता है। गुरुवार के दिन जोधपुर से कई औरत मर्द दर्शन करने को आते हैं, प्रसाद चढ़ाते हैं, मुरादें मांगते हैं, कभी २ रातों को भी यहां रहते हैं और जागरण करते हैं, फूलमण्डली होती है, जिस की मुराद पूरी हो जाती है वह भोजन बना कर थाल भी रखता है, कभी २ बकरा भी चढ़ता है, दारू की धार भी दी जाती है, गाना बजाना भी होता है, बहुत लोग नाड़राव को नाड़देव पिडयार भी बोलते हैं और इस स्थान को नाड़राव की गुफा और नाड़देव की साल भी कहते हैं। इस तहखाने की छत पर १ मंदिर या महल था जिस का थोड़ा सा चिन्ह दिखांई देता है।

नाड़राव की न तो कोई मूर्ति यहां है और न कुछ साल संवत् नाम ठाम उसके देहांत का खुदा है नामही नाम है। नाड़राव पर मुसलमानों की चढ़ाई का भी कुछ पता उन की तवारीख से नहीं लगता है और न कहीं नाड़राव का नाम उन की तवारीख में देखा जाता है।

सच तो यह है कि नाड़राव का ऐतिहासिक समय भी निश्चित नहीं है। पृथ्वीराजरासा आदि कई भाटों के ग्रंथ तो उस को पृथ्वीराज चौहान का समकालीन बताते हैं, परन्तु पृथ्वीराज के पीछे शहाबुद्दीन वा कुतबुद्दीन ने जो चढ़ाइयां अजमेर वा गुजरात पर की हैं उन के संबंध में भी नाहरराव का नाम नहीं आता है। कुतबुद्दीन के पीछे शमशुद्दीन का मंडोर को जीतना जरूर लिखा है परन्तु उस का वृत्तांत भी गोलमाल सा ही है। क्योंकि उस में किसी राजा का नाम नहीं है जैसा कि दूसरे देशों की जीत में लिखा है। हम मंडोर पर दिल्ली के बादशाहों की चढ़ाई का वृत्तांत भी फारसी तवारीखों से उद्धृत करके नीचे लिख देते हैं।

मंडोर पर दिल्ली के बादशाहों की चढ़ाई।

तवारीख फरिश्ता में लिखा है कि दिल्ली के बादशाह शमशुद्दीन ने सन् ६२३ हि० [संवत् १२८३] में रणथंभोर का किला छीना और दूसरे वर्ष सन् ६२४ [१२८४ संवत्] में मंडोवर का किला फ़तह किया।

सन् ६९२ (संवत् १३४९) में सुलतान जलालुद्दीन फ़ीरोज़ खिलजी का फ़रिश्ता में मंडोवर के पास तक लूटमार करनाही लिखा है, परन्तु ज़ियाय बरनी की बनाई हुई तवारीख़ फ़ीरोज़शाही में लिखा है कि सन् ६९१ के अखीर में सुलतान जलालुद्दीन मंडोवर

पर गया और १ ही हल्ले में मंडोवर ले लिया और उस के आसपास लूट खसोट की और बहुत सी लूट ले कर लौट आया।
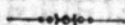
दूसरा—खंड।

ईंदाशाखा के पड़िहारों का वृत्तान्त।

मूतानेयणसी की ख्यात से—

हम पहिले मूतानेयणसी की ख्यात से ईंदा तक पड़िहारों की पीढ़ियां लिख आये हैं। ईंदा की औलाद से १ नई शाखा पड़िहारों की चली जिस का नाम भी ईंदा ही हुआ है। अब मारवाड़ में पड़िहारों की तो बापोती की कोई जमीदारी नहीं है, क्योंकि मडोवर के साथ ही उन की सारी जमीन भी छूट गई थी। उन के दिये हुवे शासनगांव तो अबतक भाट, चारण और ब्राह्मणों के पास बहुत हैं। फिर जब राठौड़ों का राज हुआ तो उन्हों ने पड़िहारों को अपने खवास पासबानों में नौकर रख कर एक दो गांव दिये या किसी को भूमि दी वही अब पड़िहारों की जाति का जीवनाधार है। परन्तु ईंदा लोग जो पड़िहारों के छुट भाई थे अपने कर्मभाग की भूमि में बने रहे, जो अब तक भी ईंदावाटी के नाम से प्रख्यात है और इसी ईंदावाटी के रानाओं का यह हाल भी हम उसी ख्यात से लिखते हैं जो ईंदा के बेटे गोपाल से शुरू होता है।

गोपालईंदा।

गोपाल, गांव दूगड़ में रहा उस समय बोहली गूजरी भी दूगड़ में आकर रही थी, उसे गोपाल ने

बहन बनाई। उस ने कहा कि मेरी बेटी किसी तरह राजपूतों में व्याह दो। गोपाल ने उस की सगाई पड़िहार साल्हा से कर दी जो गांव गंगावे में रहता था। साल्हा आया और गोपाल उस का व्याह करके बोहली गूजरी की आधी भैसें दहेज में देने लगा, मगर साल्हा ने सारी ही मांगीं और कहा कि मैं ने इन के लालच से ही तो गूजरों में शादी करना मंजूर किया है। इस पर साल्हा से और गोपाल से झगड़ा हुआ, साल्हा ने गोपाल के सिर में १ ऐसा झटका दिया कि उस का सिर टूट पड़ा। गोपाल ने मरते २ साल्हा के पेट में कटारी मार कर उस को भी मारलिया। गोपाल की औलाद नहीं थी।

इंदाराना की औलाद का नाम ईंदा पड़िहार हुवा। मारवाड़ के सब ईंदा, राना ईंदा के दूसरे बेटे बीजल की औलाद में हैं।

बीजल के ३ बेटे माहंगराव, देयतर, और कैलण थे।

राना बूटाईंदा।

माहंगराव का बेटा राना बूटाईंदा राना के घराने में बड़ा राजपूत हुआ, उस के गांव में १ खाती रहताथा जिस की १ लंगड़ी सी गाय थी जो रण (ऊसर जंगल) में चरा करती थी; उस पर १ रोझ पड़ गया, उस के पेट

से २ रोझ पैदा हुवे। खाती ने उन को पाल पोस कर बड़ा किया और गाड़ी में जोत कर फिराया, वे बड़े दौड़नेवाले निकले। दो पहर में २५।३० कोस हो आते थे। उस खाती की ससुराल जैसलमेर में थी, वह उन्हीं रोझों की बहली में बैठ कर वहां गया। सब लोग तमासा देखने आते थे, होते २ जैसलमेर के रावल ने भी सुना। रोझों को मंगा कर देखा और खाती से कहा कि ये रोझ हम को बेंच दे। खाती ने कहा कि मुझे बेचना नहीं है। तब रावल ने दोनों रोझ उस से छीन लिये। खाती बोला कि मेरे माथे पर भी राना बूटा मोजूद है, वह अपना बेर नहीं छोड़ेगा। रावल ने कहा कि तू उस से कह देना के मेरे कसबे में सांडनियां सोने के कड़े और नेवरियां पहने हुवे हैं उन को ले जावे।

खाती ने लौंट कर यह बात राना से कही। राना कुछ दिन तो चुप रहा, फिर १ दिन १ ढ़ेड को साथ लेकर पैदल जैसलमेर गया और वहां से १ सांड जो सोने के कड़े और नेवरियां पहिने हुई थी लेकर चल दिया। रस्ते में ढ़ेड ने कहा कि मैं तो थक गया हूं, राना ने उस को पीठ से बांध लिया और ५। ७ कोस चला आया। आगे बहते हुवे पानी का नाला देख कर राना ने पानी पीया और कुछ देर ठहरकर दम लिया, तब ढ़ेड बोला कि मैं भी प्यासा हूं। राना ने कहा कि मैं तो

भूलही गया था कि तू मेरी पीठ पर है। हाय मैं ने छुत पानी पी लिया। फिर खोल कर उस को भी पानी पिलाया और सांड जो लाया था उस का पांव रस्से से बांधा और दहने हाथ से उठा के उसे कुंड के ऊपर बैठा दिया और जो लोग वहां खड़े थे उन से कहा कि पीछे बार (दौड़) आती है। तुम उन लोगों से कह देना कि इस सांड को १ आदमी १ हाथ से उठाकर इसे कुंड पर बैठा गया है, तुम लोग समझ कर उस के पीछे जाना। यह कह कर राना तो चल दिया। पीछे से भाटी आये, उन से लोगों ने सारा हाल कहा, वे वहीं खड़े रह गये।

राना बूटा ने सांड को लेते वक्त १ हांक मारी थी जिस से गायें जो वहां थीं ५। ७ वर्ष तक ग्याभन नहीं हुईं।

फिर भाटियों के सेसू (जासूस) आये और राना बूटा का गांव दूकड़ देख गये; ४। ५ दिन पीछे भाटी कटक लेकर आये। राना उस वक्त १ नाडी को देखने गया था। नाडी पानी से भरी थी। वह उस पर हथियार खोलकर पाखाना फिरने गया। इतने में भाटी आ पहुंचे और हथियार उठाकर खोजों २ राना तक चले गये। राना ने इधर उधर देखा और तो कुछ नज़र न आया दो हल पड़े दिखे, उन्हीं को दोनों हाथों में उठा लिया। जब भाटी पास आये तो उन को इस तरकीब से

मारना शरू किया कि १ हल से तो १ भाटी को खेंच लेता था और दूसरे से मार डालता था। इस तरह जब बहुत भाटी मारे गये तो बाकी भाग निकले। राना ने २ कोस तक उन का पीछा किया और १ भाटी को पकड़ा; उस ने कहा मुझे मत मार जगत में तेरा जस होगा। राना वहां खड़ा रह गया। वह जगह अब तक भाटी लंका कहलाती है। दूगंड़ से ७ कोस और बालेसर से ३ कोस पश्चिम को १ ऊंचे टीले जैसी नज़र आती है।

राना बूटा के ५ बेटे बीभल, जगपाल, बूलण, राखड़, कटारमल, और बीजराज हुवे।

राना टोहा ईंदा।

राना बीभल का बेटा राना टोहा बड़ा राजपूत हुआ, वह उमैरकोट में सोढ़ी अवतारदे को व्याहा था। उस वक्त उस ने वहां बहुत कुछ त्याग (दान) दिया था और लालस चारण को अपने साथ ले आया था। उन दिनों मंडोवर का मालिक एबक मुग़ल था। तोला सोढ़ा पहिले पोकरण की तरफ़ रहता था, फिर गांव वांवरली और तोलेसर में आ रहा था उसे मुग़ल ने कहा कि घास के गाड़े लाओ, उस ने कहा कि घास तो ईंदों के गांवों में बहुत अच्छी होती है। तब मुग़ल ने ईंदों से कहा, राना टोहा; हिरद मल, और ऊगमड़ा ने

बहुत उज़र किया मगर मुग़ल ने नहीं माना तो वे घास के गाडों में रजपूतों को छुपा कर लाये। मुग़लों को मार डाला और मंडोवर का किला ले लिया।

राना टोहा का बेटा लाखन सी था और उस के बेटे सुमान और पूना हुवे जो दूगढ़ में रहे।

राना ऊगम सी ईंदा।

राना टोहा का १ भाई सावंत सी था जिसे रावत सी भी कहते थे। उस का बेटा सगराम सी और सगराम सी का ऊगम सी हुआ जिस को ऊगमड़ा और ऊगोड़ा भी कहते हैं। इस के बहुत बेटे हुवे कोई १२ और कोई १८ बताते हैं। उस वक्त राठौड़ों का बहुत ज़ोर हो गया था और रावमाला सलखावत ने महेवे की तर्फ़ से ईंदों को दबा कर अपना चाकर कर लिया था। ऊगम सी के १२ बेटों में से जो बड़े रजपूत थे राय धवल, सखरा, मेरा, गंगदेव, राजा और ऊदा, महेवे में रहते थे, मगर फिर किसी बात पर उन की और रावमाला की अनबन हो गयी जिस से वे सब नोकरी छोड़ कर चले गये।

एक दिन जब दरबार हुआ तो १ चारणी आई और उस ने ईंदों को न देख कर पूछा कि ऊगड़ावत (उगड़ा या ऊगम सी के बेटे) कहां है और जब सुना कि चले गये तो कहा कि ऐसे सिंहों को क्यों जाने दिया उन से तो दरबार भला लगता है। रावल ने आदमी

भेज कर उन को बुलाया; वे अब पालने के लिये सिंह का १ बच्चा भी लेते आये थे जिस को रावल और सब लोगों ने देखा। ऊगड़ावतों ने उस के गले में १ घंटा बांध दिया था और कहा था कि यह नाहर हमारा भाई है, जो कोई इस को मारेगा हम उस से अपने भाई का बैर लेंगे। वह नाहर खुला फिरता था और लोगों का बिगाड़ करता था। उन दिनों सिंधल राठौड़ों के पास बहुत से गांव थे और गांव झांवर में उन की ठुकराई थी। वह नाहर झांवर की गायों पर हिल गया; सिंधलों ने २।४ बेर तो सबर किया और ईंदों से कहलाया पर ये कुछ ख़याल में नहीं लाये। तब झांवर के सिंधलों ने उस नाहर को मार डाला। ये सब ऊगड़ावत भाई झांवरां के ऊपर गये, वहां १ हताई (चबुतरी) थी की उस चोकिय (सिलें) गाड़ी में लाद कर लेचले। सिंधल इन के पीछे चढ़े। दोनों दलों में लड़ाई हुई और दोनों में से कोई नहीं भागा। ७ दिन लड़े, ७ बीसी (१४०) सरदार सिंधलों के काम आये। सिंधलों के हाथ से ऊगड़ावतों का कोई सरदार नहीं मारा गया, सिर्फ़ राय धवल के १ हूल तलवार की लगी थी जिस से वह पीछे मर गया। सिंधल भी भागे नहीं, सब मरमिटे।

ऊगड़ावतों में से १ भाई सुसराल में गया हुआ था वहां उस को सिंधल भोज ने मारा।

झांवर की हताई की चोकियों में से १ चोकी अब भी गांव वाले सर के पास चित्तौड़ नाम १ पहाड़ी पर पड़ी है जहां पहिले ऊगड़ावत रहते थे।

राना राजा ईंदा।

राना राय धवल के भी कई बेटे थे, पर मरते वक्त उस ने अपने बेटों से छोटे बेटे राजा के टीका देने के लिये कहा था इस से राजा राना हुआ।

फिर रावलमाला ने अपने भतीजे राठौड़ चूंड़ा को गांव सालोड़ी के थाने पर रखा और ईंदों को उस की भोलावण (संभाल) दी। चूंडाजी को चावंडा माता की महरवानी से घोड़े खजाना और बहुतसा सामान सरदारी का मिला। ईंदों ने मुगलों को मार कर मंडोवर ले तो ली थी पर यह जानते थे कि अपने पास रहेगी नहीं, इसलिये उन्हों ने सालोड़ी में जाकर चूंडाजी को मंडोवर का किला सौंप दिया और ईंदा गोगादे (गंगदे) की बेटी लालां उन को ब्याह दी जिस से ईंदों का भरोस चूंडाजी के राज में बढ़ता रहा।

ईंदा राना राजा का बेटा राना सूरा हुआ और सूरा का कान्हा था।

राना उगमसी का दूसरा बेटा राय धवल से छोटा सखरा था, उस का बेटा मैंहा हुआ। उस की जमीन

ऊहड़ राठौड़ों ने छीन ली। मेहा की औलाद अब मारवाड़ में नहीं है।

ईंदा राजा।

जब राव चन्द्रसेन राठौड़ डूंगरपुर को चले गये और मारवाड़ में तुर्कानी हो गई, उस वक़्त जोधपुर का थानेदार ख़ाजा मुग़ल था। उस ने ईंदावाटी (ईंदों के गावों) में भी थाने बैठा दिये थे। १ गोपालसर में, दूसरा बालेसर में, और तीसरा खुडाले में था, ऐसे दो एक, थाने और भी थे। ईंदा लाग मुकाता और ऊड़दा (हाथ उठाई हुई रकम) दे देते थे। ख़ाजा ने हठ किया कि मैं तो लाटा करूंगा। ईंदाराजा* ने अपने भाई बंदों को जमा किया, जब ख़ाजा वहां आया तो उस को पीट कर मार डाला, थाने भी उठा दिये और बहुत से तुर्क भी मारे।

ईंदा राजू लाहड़ोत।

राना बूटा का पांचवां बेटा बीजराज गांव भालू में रहता था, उस का बेटा लाहड़ था, लाहड़ का राजा हुआ। उस वक़्त कुंडल (परगने सिवान का १ इलाक़ा) में आचगण जाति के भाटी रहते थे। उन के यहां पंवार सांगण का व्याह हुआ था और उन्होंने सांगण को बूर नाम १ घोड़ी दी थी। सांगण ने लोटते हुवे गांव

* यह ईंदा राजा, राना राजा ईंदा के सिवाय था।

भालू में डेरा किया और घोड़ी की तारीफ आचगण भटियानी (अपनी ठुकरानी) से की। उस ने कहा कि इस की बछेरी मेरे भाइयों के पास इस से भी अच्छी है, सांगण ने कहा कि तू जाकर मांग ला। उस ने. कहा कि मांगी हुई तो शायद नहीं देंगे वह बोला की तू बछेरी ला दे जब तो मेरे तेरे सम्बन्ध है नहीं तो नहीं। यह कह के दिन निकलतेही उसे छोड़ कर चला गया।

आचगण ने राजू लाहड़ोत से कहलाया कि तू मुझे ले जावे तो मैं चलूंगी। राजू बड़ा राजपूत था, उस ने आचगण को बुला लिया। राजू जब आचगण के साथ चौपड़ खेलता था और उस की गोट (नर्द) मारता था तो कहता था कि मार सांगणराव की, आचगण ने कहा कि सांगणराव बड़ा राजपूत है (ऐसा मत कहो) मगर राजू ने वह कहना नहीं छोड़ा, तब आचगण ने सांगण रांव को कागज लिखा। वह भालू पर आया। उस वक्त राजू के आदमी १ बरात में गये हुए थे, राजू मारा गया। आचगण ने अपना १ हाथ काटकर सांगणराव को दिया और आप राजू के साथ सती हो गई। इतनेही में सालू नाम १ इंदा सुसराल से आ गया उस ने सांगणराव को मारा उस के आदमियों ने उस को भी मार डाला।

ईंदा कर्ण सिंह के बयान से—

पड़िहार ।

वशिष्ट आदि ब्राह्मणों ने राक्षसों को मारने के लिये अग्निकुंड बनाकर आग में से पड़िहार, चौहान, सोलंखी और पंवार नाम के ४ नये रजपूत पैदा किये थे। उन्होंने राक्षसों को मार कर हिन्दुस्तान का राज बांट लिया, जिस में काबुल का राज पड़िहार के हाथ आया। वहां उस के वंश में बीनराजा चकवे अर्थात् चक्रवर्ती हुआ, जिस का हुक्म सातों विलायतों में चलता था। फिर पड़िहार काबुल से अयोध्या में गये। वहां से उठ कर मंडोवर में आये और पंवारों को मार कर मारवाड़ का राज करने लगे, जहां नागार्जुन बड़ा राजा हुआ, जिस को शेष नाग की बेटी ब्याही थी। उस से नाड़राव हुआ जो मंडोवर के राजाओं में इतना बहुत प्रसिद्ध है कि उस से पहिले की पीढ़ियां पड़िहारों को याद नहीं हैं।

नाड़राव के जियादा प्रसिद्ध होने की बातों में से यह भी है कि उस ने पुष्कर जी में से रेत निकलवाई और वहां बाराहजी का मन्दिर बनाया। वह पृथ्वीराज चौहान से भी लड़ा था। नाड़राव के पीछे की पीढ़ियां यह है—

१ राघोदेव

२ गांगीव
३ देपाल
४ मेहा
५ खाखूजी
६ चांडरिख
७ सूरसिंह—इस का बनाया हुआ बालसमंद तलाव मंडोवर और जोधपुर के बीच में है। इस के दो बेटे थे, एक तो इस के पीछे मंडोवर की गद्दी पर बैठा जिस का नाम और कुरसीनामा नहीं मालूम है और दूसरे का नाम इंदा था उस का हाल अलग लिखा जावेगा।

रानारूपड़ा।

सब से पिछला राजा मंडोवर का राणा रूपड़ा था, उस से तुर्कों ने मंडोवर छीन लिया। तब वह जैसलमेर के गांव बारू और चायण में गया और बुध जाति के भाटियों से जो वहां के जागीरदार थे कहा कि हम को रहने के वास्ते जगह दो, हम तुम को बेटिया ब्याह देंगे। उन्हों ने रहने को जगह बता दी। पड़िहारों ने दगा विचार कर १४ लड़कियों की सगाई भाटियों से कर दी जिन में १ बेटी राना की ६ उन के भाई बंदों की ७ भीलों और मेघ वालों वग़ैरा नीच जाति की बेटियां थीं और १ बाड़े में बारूद

बिछाकर भाटियों को बुलाया जब वे बारात लेकर आये तो उस बाड़े में उतारा और रात को सुरंग में आग लगा कर उन सब को उड़ा दिया वे कुंवारी लड़कियां भी उसी आग में जल मरीं और मरते २ राना को यह साप दे गईं कि तुम ने हम को दाग लगा कर इन्हें दगा से मारा है सो तुम भी इसी तरह से मर खप जाओगे।

वे लड़कियां देवियों में गिनी जाती हैं और "रावत्रियां जी" कहलाती हैं ७ जो पड़िहारों की बेटियां थीं वे उजली और ७ जो कमीनों की लड़कियां थीं वे मेली, रावत्रियां कही जाती हैं। उन्हों ने गांव रूणेजे में जहां रामसाह पीर का देवरा है रावतसर नाम तालाव से प्रकट होकर लोगों को परचा दिया था इस लिये रावत्रियां नाम हुआ। राजपूत और दूसरी नीच जाति के लोग उन को पूजते हैं। उन के पुजारी भील होते हैं। गुड़ का मीठा दालिया जिसे लड़कढ़ कहते हैं और बकरा उन के थान पर चढ़ता है। लड़कढ़ और बकरे का माथा तो पुजारी ले जाते हैं और बाकी का मांस यात्री खा लेते हैं।

रावत्रियां जी के थान में सात सात खड़ी मूर्तियां उजली और मेली रावात्रियों की अलग २ पत्थर पर खुदी होती हैं। उजली रावत्रियां तो उज्जल और मेली नीच जाति के लोग लुगाइयों के सिर पर चढ़कर खेलती बोलती और बकरती हैं।

इस दगाबाजी की दूसरी यादगार यह गीत की भड़ है जो उस समय पड़िहारों के ढाड़ियों ने सारंगी में गाया था "एबातां भली नहीं राना रूपडा बुधां घर पडिहार" अर्थात् राना रूपड़ा पड़िहारा बुध भाटियों के घर में यह बातें अच्छी नहीं हैं" पडिहारों ने जब तो बुध भाटियों की ज़मीन लेली, मगर फिर बेटियों के सराप और भाटियों के साथ बैर हो जाने से थोड़े बरसों पीछे ही वहां भी नहीं ठहर सके और इधर उधर बिखर कर बहुत से उन में से महाजनों मालियों भीलों और मुसलमानों की जातों में मिल गये और जो राजपूत बने रहे वे छड़े बिछड़े मारवाड़ के फुट गांवों में हैं।

ईंदा।

ईंदा पड़िहारों की शाखा है। पड़िहार राजा सूर सिंह ने मंडोवर के पास १ बड़ा तालाव खुदवाया था, परन्तु ३ वर्ष तक बर्षा न होने से खाली पड़ा रहा। राजा को बड़ी चिन्ता हुई, उस ने ब्राह्मणों से उपाय पूछा तो कहा कि बड़े कंवर का बलिदान दो तो इंद्र राजी हो कर बर्षा करे और तालाव भर जावे।

जब राजा ने यह कठिन बात मान ली तो ब्राह्मणों ने कंवर को १ कठपीजरे में रख कर तालाव में गाड़ा और उस पर होम कर के इंद्र का आवाहन किया तो बर्षा हुई और तालाव भर गया। तब वह

पिंजरा भी ऊपर आकर तैरने लगा। राजा ने निकलवा कर खोला तो कंवर जीता जागता निकल आया और इंद्र का दिया हुआ समझ कर ईंदा नाम रखा और तालाव का नाम बालसमंद दिया क्योंकि बालक का बलदान देने से भरा था.

ईंदा पाटवीं कंवर था तो भी थाटवी (छोटा) हो गया किस लिये कि उस को तालाव में गाड़ देने के पीछे छोटा भाई पाटवी हो गया था, पीछे भी वही पाटवी रहा।

ईंदा कोथल के ८४ गांव ऊदट से लेकर नागाणे तक मिले और उस की औलाद का नाम भी ईंदा हुआ।

ईंदा के पीछे उस के बेटे पोते ४ पीढ़ी तक तो मंडोवर में रहे फिर अपनी जागीर के गावों में चले आये क्योंकि जो भाई पीढ़ियों में दूर पड़ जाते हैं उन्हें ४ पीढ़ी पीछे राजा के नजदीकी भाइयों के लिये राजधानी में जगह खाली करनी पड़ती है।

ईंदा के पीछे की पीढ़ियों के नाम नीचे लिखते हैं।

१ राना बीजल—ईंदा का बेटा।

२ बिहंगराव—

३ बूटा सना—जो मंडोवर छोड़ कर गांव दूगर में आया।

४ बीभल—

५ रावत जी—इस ने उमरकोट के लालस जाति के चारण राणायत को जिस ने उन की सोढ़ी रानी को पढ़ाया था, अपना पौलपात बनाकर सोहरी गांव दिया, जब से लालस जाति के चारण इंदोंके पौलपात हैं। पहिले आसिया जाति के थे। राना रावत का छोटा भाई टोहा था जिस की औलाद में बीकानेरिये इंदा हैं इन का हाल अलग लिखा जावेगा।

६ सगराम सिंह.

७ ऊगम सिंह-गांव दूगर से बालेसर में जाकर रहा और मंडोवर का किला तुर्कों से फतह करके रावचूंडाजी राठोड़ को अपने बेटे गंगदेव को बेटी के दायजे में दे दिया जिस की साक्षी का यह दोहा अब तक मारवाड़ में लोग पढ़ते हैं.

चूंडा चंवरी चार, दी मंडोवर डायजे.
ईंदा तणों उपकार, कमधज कदे न बीसरे.

अर्थात् चूंडा को चंवरी (विवाह) के नेग में मूंडोवर दहेज में दिया, ईंदों का यह उपकार राठोड़ कभी नहीं भूलेंगे.

राव चूंडाजी ने इस उपकार के बदले में यह स्वीकार किया था कि तुम्हारे पास जो गांव पीढ़ियों से चले आते हैं ये वैसेही बनें रहेंगे, राठोड़ उन में हाथ नहीं डालेंगे.

राना ऊगम सिंह के कई बेटे थे, जिन में राय धवल बड़ा था।

८ राना रायधवल—जब इस से और सिंधल जाति के राठौड़ों से लड़ाई हुई तो उस में राना को १ गोली लगी जिस के घाव से मरते २ उस ने अपने बेटों से कहा कि यह गोली सिंधलों के हाथ की नहीं है। मेरे भाई राजा ने राज़ की लालच से मारी है, सो तुम मेरे पीछे उस को टीक़ा देना, उन्होंने बाप के कहने से वैसाही किया। मगर ढोलियों ने कहा कि "मेतो मांजीरे मारणहार के मूंडो को देखांनी" अर्थात् "हम तो अपने मालिक के मारनेवाले का मुंह नहीं देखेंगे"।

राना राजा ने यह सुनकर उन ढोलियों को बाले-सर से निकाल दिया और सोनेलिया, जाति के ढोलियों को अपना ढोली बनाया; जो अब तक गांव गोपाल सरबस्तवा और नीबारा गांव के ईंदों के ढोली हैं, और बाकी ईंदों अर्थात् रायधवल वगेरा की औलाद के ढोली वही पुराने ढोली, ढोला जाति के हैं।

इसी तरह राजा राना ने अपने पुरोहितों को एक दम से बदल डाला था। पहिले मलारिया जाति के पौकरणा ब्राह्मण इन के पुरोहित थे और जब किसी ईंदा की बेटी का विवाह होता था तो जितने पुरोहित उस में आते थे दो २ मुहरें नेग की लेते थे; परन्तु जब ईंदों की औलाद बहुत बढ़ गई और पुरोहित भी

बहुत हो गये और दो २ मुहर देने की श्रद्धा नहीं रही तो ईंदों ने बहुत चाहा कि पुरोहित भी अपनी दच्छिणा कम करें। जब उन्हों ने किसी तरह से भी नहीं माना तो राना राजा ने सखराजी ईंदा की सलाह से एक बड़ा बाड़ा काटों का बनाया और अपने पुरोहितों को दच्छिणा देने के बहाने से बुलाकर उस में जला दिया। उस दिन से मलारिया बोहरों ने उन की पुरोहिताई छोड़ दी। तब राना राजा ने गांव राता कोट इलाके अजमेर से जहां उन की बहन व्याही थी एक गूजर गौड़ ब्राह्मण को बुलाकर अपना पुरोहित बनाया, जिस के वंश में अब तक ईंदों की पुरोहिताई चली आती है।

९ राना उदेकरन।

१० राना नीबाजी—इस का छोटा भाई हापा था, उस ने गांव गोपालसर बसाया।

११ राना गोयंद।

अब इस शाखा के ईंदा गांव नीबारा में रहते हैं और वही पाटवी हैं। परन्तु राना पदवी गांव बेलव के ईंदों में है जो राना रामचंदर को मिली थी।

राना रामचंदर।

राना रायधवल का एक भाई सखराजी था, उस की औलाद गांव बेलवे में रहती थी। जब जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंहजी के पीछे मारवाड़ में २५ वर्ष

तक तुरकानी रही थी, तब यूसुफखां बादशाह औरंगज़ेब की तरफ से बेलवे का थानेदार होकर आया। तो रामचंदर जो सखराजी की औलाद में एक पाटवी सरदार था अपने भाई बंदों को इकट्ठा करके यूसुफखां से लड़ा और उस को मार कर उस का माल असबाब राड़धड़े में महाराजा अजीतसिंहजी के पास ले गया। महाराज़ा ने राजी होकर रामचंदर को राना पदवी और दो गांव दिये।

बीकानेरिये ईंदे।

राना रामचन्दर के भाइयों में से ईंदा जेतसिंह और लखधीर बड़े सूर वीर राजपूत थे। जब जोधपुर के महाराजा अजीतसिंहजी को मारने का विचार उन के कुंवर अभेसिंहजी ने किया तो उन दोनों ने इस काम का बीड़ा उठाया। लेकिन राना रामचंदर ने उन से कहा कि ऐसा काम करने में तुम्हारा वतन मारवाड़ से उठ जावेगा। उन्हों ने पूछा फिर हम क्या करें, राना ने कहा कि यहां से भाग जाओ; तब वे भाग कर बीकानेर चले गये जहां बहुत वर्षों तक रहे।

फिर जब महाराजा अभेसिंह ने गुजरात फ़तह की तो कंठा और पीलू गायकवाड़ ने कहलाया कि यातो हमारी चौथ दो या लड़ो। महाराज ने उन को दगा से मारने का इरादा करके सरदारों से पूछा कि ऐसा कौन

है जो इन को मारे। रास के ठाकुर ने अर्ज की कि ऐसे तो २ हरामखोर ईंदा जेतसिंह और लखधीर हैं जिन्हों ने महाराजा अजीतसिंहजी के मारने का भी इरादा कर लिया था। महाराजा ने बीकानेर से उन को बुलाया और उन्हों ने जाकरें दगा से पीलू और कंठा को मार डाला। इस की बाबत यह कहावत चली आती है—

पाका पीलू पार पडींदा
गिलमां माथे खाय गड़ींदा
आदू खेती आहीज ईंदा—

अर्थात् पंका हुआ (बूढ़ा) पीलु पार पड़ गया (मारा गया) वह गलीचों पर तड़प रहा है, ईंदों की आदि खेती (कमाई) यही (हत्याकर्म) है।

महाराजा साहिब ने प्रसन्न होकर अजीतसिंह को गांव बांवरली और लखधीर को गांव कोरना दिया। परन्तु अब दोनों गांव राज में जब्त हो गये हैं, कुछ जमीन बांवरली में रह गई है।

जेतसिंह और लखधीर बहुत बरसों तक बीकानेर में रहे थे, जिस से उन की औलाद बीकानेरिया ईंदा कहलाती है।

गोपालसर के ईंदा।

गोपालसर के ईंदा राना राजा के पोते और राना नीबाजी के भाई हापा के वंश में हैं जिस ने माडू शहर के ऊजड़ खेड़े के पास गोपालजी के नाम पर जो वहां गूजरों से लड़कर काम आये थे गोपालसर गांव बसाया था, जब से अब तक उन की इतनी पीढ़ियां हुई हैं।

१ हापांजी
२ देवीदास
३ सूरजमल
४ जैसा
५ नगा
६ मेघराज
७ कुसलराज
८ करमचंद
९ जीवराज
१० जोधसिंह
११ करन सिंह *
१२ जोगसिंह—ईंदाजी से २२ वीं पीढ़ी में।

---

* इन्हीं करनसिंहजी ने यह सब हाल अपनी याद से लिखाया था। पढ़े लिखे नहीं थे तो भी बहुत से राजपूतों की ख्यात (तवारीख) कंठाग्र थी और अपने गनायतों की हंसी मसखरी तो ऐसी करते थे कि वे लोग झेंप जाते थे।

ईंदावाटी।

ईंदावाटी, या ईंदों का देश पहिले तो ८४ गांवों का १ इलाका जोधपुर के उत्तर पश्चिम फलोदी और जोधपुर के परगनों में फैला हुआ था, मगर अब तो * ११ गांव भोमीचारे के तौर पर रह गये हैं, बस यही इस समय की ईंदावाटी जोधपुर से १५ कोस पश्चिम में है। नाम उन ११ गांवों के ये हैं—

१ बेलवा बड़ा—जहां ईंदों के राना † रहते हैं.
२ बेलवा छोटा.
३ बालेसर
४ नीबारोगांव.
५ गोपालसर
६ बस्तुवो.
७ भालू.
८ देवातु.
९ भालू राजा का.
१० ईंदों की कूई.
११ भूंगरा.

---

* बाकी गांव राठौड़ राजाओं ने धीरे २ कई पीढ़ियों में ईंदों से छीन लिये हैं क्योंकि उन्हों ने चूंडाजी के पीछे ईंदों से डोला मांगा था। ईंदों ने डोला नहीं दिया और कहा कि आओगे तो ब्याह कर देंगे। ज़ियादा गांव राव गंगा जी के राज में ज़ब्त हुए हैं।

† इस समय बेलवे के राना सुरतान सिंह हैं।

इस ईंदावाटी की हदें दक्षिण में कोरणवाटी से उत्तर में पचभद्रे देवराजोत राठौड़ों और भाटी राजपूतों के गावों से परगने पश्चिम में गोगादे राठौड़ों के गावों से और पूर्व में परगने जोधपुर के गावों से मिलती है। यह ४ कोस लंबी और २ कोस चौड़ी जमीन १ चिटकोर गढ़ के परगने में है।

ईंदावाटी में बड़ा पहाड़ छीतरना, जो बहुत ऊंचा नहीं है, बीच में से दो टुकड़े हो गया है १ टुकड़े को तो माताजीवाली चर कहते हैं, जिस के पास गांव बंस्तवा बसता है। दूसरा टुकड़ा जो ऊंडू कहलाता है, बालेसर के पास है। बाकी छोटी २ पहाड़ियां लाल और सफेद पत्थरों की हैं, जो मकान बनाने में काम आते हैं। पत्थर की १ गाड़ी पर १ टका हासिल का चामुंडा माता के पुजारी लेते हैं। सालभर में कोई १००) आता होगा।

बरसात में ६ नदियां छीतर पहाड़ से उतर कर ईंदावाटी में बहती हैं। जाड़ों और गरमियों में सूखी पड़ी रहती हैं पर जमीन में इन की सजलाई रहती है। इन के किनारों पर कुवे खोदने से पानी निकल आता है जिस से ऊनालू साख में गहूं, तंबाकू, मूली, प्याज वेगरा होते हैं।

ईंदावाटी के बाहर चारों तर्फ़ न इतना पानी है

और न ऊनालू साख होती है।

उन नदियों के नाम ये हैं—

१ घोटाबर—जो बस्तवे की सीमा में होकर ईंदावाटी के बाहर गांव आगोलाई के बंदे में चली जाती है।

२ भरड़--गांव बेलवे के पास घोटाबर में मिल जाती है।

३ बाहमी—बस्तवे और गोपालसर के खेतों में फैलती है।

४ कूईवाली—गांव बालेसर के नीचे हो कर परगने पचभद्रे के गांव ढांढणियां में चली जाती है।

५ भालू की नदी—यह भालू की जमीन में ही बहती है।

६ बालेसर की नदी—भालू की नदी में मिलती है।

झील १ ही गांव जो धारीकुई के पास १ कोस के घेरे में इस में है। बरसात का पानी भर जाता है, मगर एक महीने से ज़ियादा नहीं रहता।

ईंदावाटी के गांवों में बड़ा गांव बालेसर है जिस को राना ऊगमसी ने बसाया था। पहिले बालाखाती का खुदाया हुआ कुआ बालाबेरा नाम था, उसी पर इस बस्ती का नाम भी बालेसर हुआ। राव चूंडा जी राठौड़ का ब्याह इसी गांव में हुआ था। यहां ईंदों की कुलदेवी चामुंडा माता का मंदिर है।

पुराने मकान और मन्दिर।

१ गांव बेलवा बहुत पुराना है उस को जूनागांव भी कहते हैं। इंदावाटी का पुराना नाम बेलवापट्टी ईंदों के बसनें से पहिले इसी गांव के नाम पर था।

२ गोपालसर के पास जो गोपाल जी ईंदा का बसाया हुआ है उत्तर की तर्फ़ पाहिले मांडू शहर बसता था, अब उस में की १ पुरानी बारादरी रह गई है जिस को चंवरी कहते हैं। यह १ छोटी सी इमारत आदमी के बराबर ऊंचे थंभो की १०। १२ कमरों में बटी हुई है, जिन पर दो दो गज की लंबी और चौड़ी सिलें छत की जगह रखी हैं। चौभीते में एक २ हाथ से कुछ जियादा लंबे चौड़े और ऊंचे छिले हुवे पत्थर लगे हैं।

इसी बारादरी के पास जहां गोपालजी का थान है कई अच्छे २ घड़े हुवे स्थंभ खड़े हैं, जिन पर आठ नौ सौ वर्ष के पुराने अक्षर तथा लोग लुगई और घोड़े खुदे हैं, जिन से उस समय के लोगों की सूरत शक्ल चाल ढाल गहने कपड़े और जीन खोगीर वगेरा की बनावट मालूम होती है। हर्फ़ पुराने होने से पढ़े नहीं जाते। पड़िहार का नाम जरूर निकलता है जिस से जाना जाता है कि लंबी डाढ़ी के आदमी जो इन स्थंभों में खुदे हैं पड़िहार ही थे।

३ खाडादेवल-नाम १ पुराना मन्दिर चामुंड माता का गांव भालू के पास ढहा पड़ा है। यह इतना बड़ा था कि इस के पत्थर ४ कोस तक बिखरे हुवे हैं।

कहते हैं कि जब तुर्कों ने मंडोवर लेकर इस गांव में गोहत्या की थी तो चामुंडा माता की करामात से इस मन्दिर के पत्थर उड़ २ कर उन पर पड़े थे।

४ घोटावर माता का थानगांव बस्तवे में बहुत पुराना है। पहिले गोतम नाम १ राक्षस यहां रहता था, जिस को चामुंडा माता ने मारा और इस से उन का दूसरा नाम घोटावर हुआ।

५ बेलवे के पास बडाल नाम १ पहाड़ी पर महादेवजी का मंदिर बहुत पुराना है।

ऊजड़ खेड़े।

इंदावाटी में पाहिले मेर बसते थे, उन के गांव अब तक उजड़े पड़े हैं, जिन के सिवाय और भी कई पुराने खेड़े हैं, जैसे गोपालसर के पास मांडू शहर ऐसेही बालेसर नीबारा गांव और बेलवे की सरहदों में भी पुराने खंडर बहुत से हैं जिन को खोदने से पुराने मकानों की नीवें और कभी २ और भी चीजें निकल आती हैं। जैसे १ बेर गोपालसर के पास नींव खोदते हुवे १ आला (ताक) निकला जिस में लाल रंग की १ पगड़ी बंधी हुई धरी थी। उस की बंदिश अजब ढंग

की थी। जगह २ कंगूरे उठे हुवे थे, हाथ लगाते ही पिस गई, क्योंकि पुरानी पड़ जाने से गल सल कर फूस हो गई थी।

इसी तरह से १ बेर उसी गांव की जमीन में रानोलाई नाड़ी (तलाई) पर खड्डा खोदते हुवे ३ हाथ नीचे आदमी के पांव की १ हड्डी निकली थी जो २ हाथ लंबी थी।

मिट्टी के बर्तन तो जमीन में से कई बेर निकल आते हैं पर ये बहुत भारी होते हैं, शायद जमीन में रहने से उन पर मट्टी की तह चढ़ जाती होगी।

गांव बेलवे की जमीन में १ बेर कुवा खोदते हुवे एक तलवार निकली थी मगर काठ उस को ऐसा खा गया था कि जब जरा मोड़ते थे तो टूट कर बिखर जाती थी।

सगाई ब्याह की रीति रसमें।

सगाई इस तरह होती है कि पहिले लड़का लड़की के मां बाप मिलकर सगाई की बात ठहराते हैं जिस में रुपये पैसे के लेने देने का ठहराव होता है। लड़की का बाप रुपये वाला हो तो कुछ नहीं लेता नहीं तो १००) से ५००) तक लड़के वाले से लेना ठहराता है या जबही ले लेता है।

फिर लड़के का बाप अपने हाथ में अमल (अफ़ीम) लेकर लड़की के बाप को देता है। जो वह अमल गला हुआ

अर्थात् अफीम का रस होता है तो लड़की का बाप उस की हथेली पर मुंह लगा कर पी जाता है और सूखा हो तो हाथ से उठा कर अपने मुंह में रख लेता है। फिर वह भी लड़के के बाप और उस के भाई बंदों को जो वहां मोजूद हों उसी तरह से अमल देता है और गुड़ बांटता है।

सगाई हो जाने की यह रीति जो मुख्य है। यदि बेटीवाले के घर पर हो तो वह बेटे के बाप और उस के साथियों को खाना खिलाता है और जो बेटेवाले के घर पर हो तो वह बेटी बालों को खाना देता है, खाना दोनों संबंधी मिलकर खाते हैं। खाने के पीछे चुल्लू करने से पहिले दूध और गुड़ मिला कर पीते हैं। फिर लड़के का बाप २ खोपरों में ५) डाल कर लड़की के बाप को देता है और लड़की के लिलाट पर अपने हाथ से तिलक करता है और कुछ रुपया और अमल भी उस के हाथ में देता है।

इन बातों से सगाई पक्की हो जाती है छूट नहीं सकती। कदाचित वह लड़का मर जावे तो उस का छोटा भाई उस मांग* (लड़की) को व्याह लेगा दूसरा आदमी नहीं व्याह सकेगा।

---

* सगाई हो जाने के पीछे क्वांरी लड़की मांग कहलाने लगती है। मांग छूटने का रिवाज नहीं है, इस की मारवाड़ में कई ओखाणे (कहावतें) हैं जैसे (१) रजपूत सिपाही की मांग नहीं छूटे (२) परणी छूटे मांगी

ब्याह।

ब्याह के वास्ते दोनों सम्बन्धी साहा दिखाते हैं। जब साहा ठहर जाता है तो बींदनी (दुलन) का बाप अपने ब्राह्मण के साथ बींद (दुल्हे) के घर लगन भेजता है। बींद का बाप उस ब्राह्मण को १) और नारयल देता है फिर बरात चढ़ती है। जिस में बींद के नज़दीकी रिस्तेदार नाई, ब्राह्मण, ढोली और कामदार तो ज़रूरही जाते हैं। जियादा मकदूर हो तो और लोगों को भी साथ ले लेते हैं। गांव दूर हो तो साहे से दो एक दिन पहिले नहीं तो उसी दिन बरात मांड (बींदनी के घर) पहुंचती है और गांव के किनारे पर उतर कर नाई को बधाई देने के लिये भेजती है। बींदनी का बाप नाई को पेट भर कर घी पिलाता है और १ खेस (चादरा) भी उढ़ाता है फिर उस के भाई बंद ऊंट घोड़ों पर चढ़ कर सामेले (बरात की पेशवाई) के लिये जाते हैं। बरात को जान और सामेले वालों को पड़जान कहते हैं।

जान और पड़जानवाले आपस में मिलकर ऊंट, घोड़े, दौड़ाते है। इस दौड़ में जो पड़जानवाले आगे

नहीं छूटे। अर्थात् रजपूत और सिपाही की मांग नहीं छूटती, क्योंकि वे मांग के वास्ते मरते मारते हैं। यहां सिपाही से मतलब मुसलमानों की ऊंची जाति के लोगों या मुसलमान रजपूतों से है (२) ब्याही हुई तो छूट जाती है और मांग नहीं छूटती।

बढ़ कर गांव में घुस जावें तो उन्हें जानवालों को कुछ नहीं देना पड़ता और जो जानवाले उन से पहिले पहुंच जावें तो पड़जानवाले जैसा उन से बन पड़े ५) से कम या जियादा उन को देते हैं। फिर गांव की औरतें १ क्वांरी कन्या के सिर पर बड़ ग्योवड़ा (कलस) रखकर गाती बजाती जान के सामने आती हैं। बींद का बाप उन के बड़ ग्योवड़े में १) और और ४ पैसे डालता है, वह उसी कन्या को मिलता है।

फिर जाजम बिछ जाती है उस पर जानी (बराती) और माडी (मंढेवाले) बैठ जाते हैं। बींद कहीं तो घोड़े पर चढ़ा खड़ा रहता है और कहीं उतर भी जाता है। बींदनी के घर का ब्राह्मण उस के तिलक करता है उस समय बींदनी का बाप बींद को ५) और १ नारयल देता है और १ थाली में कुंकुम (रोली) घोल कर बीच में रखता है। बींद का बाप उस में २५) डालता है और ४) १४ फ़दये (५६ पैसे) और १४ अमल के मावे (गोलियां) कमीनों को देता है।

इस के पीछे मांडवाले किसी अच्छी जगह में जान को डेरा (जनवासा) दिलाते हैं, उसी वक्त खाती बींदनी के दरवाजे पर जाकर तोरण बांधता है, जो रंगी हुई लकड़ियों का होता है और जिस में चिड़ये लगी रहती हैं। जब तक बींद आकर उसे नहीं बांदता (बंदन करता) है कोई आदमी उस दरवाजे में होकर नहीं निकलता।

लड़केवाले भी निकलना चाहें तो कहते हैं मत निकलो निकलोगे तो बिल्ली हो जाओगे।

फिर बींद अकेला घोड़ेसवार बींदनी के दरवाजे पर जाकर तोरण बांदता है (अर्थात १ छड़ी से ४ बेर उस को छूता है) उस वक्त जों कई दूसरी जातियों में बींद के पीछे १ कांरी कन्या को हाथ में नमक देकर बैठाते हैं वह दस्तूर यहां नहीं है।

तोरण बांद कर बींद घोड़े से उतरता है और १ चौकी पर जो अंदर से आती है दरवाजे के आगे बैठ जाता है। कनात खिंच जाती है और सास १ थाल लाकर उस में से थोड़ा सा दही जो कपड़े में बांध कर गाढ़ा कर लिया जाता है, हथेली में फैलाती है और उस में कुछ सरसों मिलाकर बींद के माथे पर चिपकाती है और कहती है देखो मेरा दिया हुआ दही मतलजाना अर्थात् कुपात्र न निकल जाना।

बींद का बाप ५) उस थाल में डलवा देता है। फिर काकी सास १ थाल में बहुत से आटे के दिये लाकर आरती करती है इस को भगामग और चमकदिया भी कहते हैं २) उस को भी इस नेग के मिलते है।

फिर बींदनी का मामा आकर बींद के पाव घुटने और हथेली में आटे और हलदी की मिली हुई पीठी (उवटने) की कुछ २ टीकियां लगा देता है; उस

को १) रुपया मिलता है उस के पीछे सालिया आकर वही पीठी अपनी आठो उंगलियों में लगा २ कर ४ बेर बींद के बदन पर नीचे से ऊपर तक थोड़ी २ लगाती हैं फिर ४ बेर ही ऊपर से नीचे उतारती हैं।

जब वह रीति हो चुकती है तो बींद चौकी से उठकर पलंग पर बैठ जाता है। कंवरकलेवे की थाली आती है जिस में मीठा भोजन लापसी और सीरे वग़ेरा का होता है, जब बींद खाने लगता है तो औरतें यह गीत गाती हैं।

कंवर कलेवो लाडो जी मन जाने, तेड़ो ......
सिंहजी ने जो जीमनो बतावे।

अर्थात् दूल्हा कुंवर कलेवा खा नहीं जानता, बुलाओ* सिंहजी को जो इसे खाना सिखावें।

बींद के खा चुकने पर बींदनी का बाप बरातियों को डेरे से बुलाकर खाना खिलाता है, फिर बरात अपने डेरे पर जाती है और "पडला" लेकर आती है पडले में इतनी चीजें होती हैं—

१ सालूकसूमल १
२ घाघराकसूमल १
३ घाघराहरा १
४ चुंदड़ी (चुनरी) १

---

* ये खाली जगह नाम की है जो दूल्हे के बाप और काका वग़ेरा के लिये जाते हैं।

५. हाथी दांत का चूड़ा १
६ कांचली (चोली) २
७ मिसरी
८ मेवा
६. सिंघाड़े
१० बतासे
११ दमीदे (बड़े बतासे)
१२ लोंग; इलायची
१३ बासवाली (सुगंध)
१४ कुंकुम
१५ महदी
१६ लकड़ी के कूंपले (डबियां) ४
१७ नारयल लगनीक १
१८ नारयल हरबूजी सांखलाका १

लगनीक नारयल तो १२ महीने तक बींदनी के घर पर रहता है और हरबूजी के नारयल को बराती लौटा ले जाती हैं और अपने गांव के काँकड़ (सीमाड़े) पर हरबूजी * सांखला के नाम पर फोड़कर बांट खाते हैं इस से ऐसा समझा जाता है कि बुरे शकुन जो हुवे हों तो दब जावें।

---

* हरबूजी, सांखला जाति के पंवार राजपूत अब से ४०० वर्ष पहिले मारवाड़ के गांव बेंगटी में हुवे थे जो बड़े सिद्ध पुरुष माने जाते हैं। बहुत सी बातें इन की करामात की राजपूतों में मशहूर।

गहना इतना तो सगाई में ही चढ़ जाता है।

१ कडियां चांदी की १ जोड़ी

२ सार्टा चांदी की १ जोड़ी

३ ओगणिया सोने के कानों में पहिनने के १ जोड़ी

और जो यह गहना सगाई में नहीं दिया जावे तो पडले के साथ दिया जाता है। इस के सिवाय और गहना देने का दस्तूर तो नहीं है पर जो कोई मालदार हो तो दे भी सकता है।

पड़ले के पहुंचते ही बींदनी के तेल चढ़ाया जाता है अर्थात् नायन तेल और पीठी (उबटन) मल कर उस को नहलाती है। जैठ या सुसर आकर उस के तिलक करता है फिर पड़ले का जोड़ा और चूड़ा पहिनाया जाता है और ब्राह्मण बींद बींदनी को अंदर ले जाकर माईयों के पास बैठाता है और दोनों का छेड़ाछेड़ी (गठजोड़ा) बांधकर हथलेवा जोड़ देता है।

तोरण के साथ खाती बनायक अर्थात् गणेशजी की भी मूर्त्ति लाता है उस को बैठाकर भीत पर घी की सात टिपकयां लगाते हैं उन्हीं को माईयां (मात्रिका) कहते हैं। ये नागनीचियां देवी के चिन्ह होते हैं।

फिर आंगन में चंवरी मंडती (बनती) है यानी ४ तर्फ ४ खूंटियां गाड़कर मूंज और सूत बांधते हैं, चारों खूंटियों के पास ७। ७ कलस या घड़े मिट्टी के

तले ऊपर चुनते हैं, बीच में १ लकड़ी गाड़ कर उस पर बड़ बेवड़ा (कलस) रखते हैं।

ब्राह्मण बींद बींदनी को माईयों के आगे से लाकर चंवरी में बैठाता है, होम करके बेद पढ़ता है, औरतें व्याह के गीत गाती हैं, वहां बींद बींदनी और ब्राह्मण के सिवाय और कोई मर्द नहीं होता है।

होम के पीछे बींद बींदनी को उठाकर आग के गिर्द फिराते हैं इस को फेरा खाना कहते हैं। जब ३ फेरे हो चुकते हैं तो बींदनी का मामा, काका या भाई आकर सेवरे देते हैं जो एक प्रकार का आशिरबाद है।

फिर चोथा फेरा होता है उस के पीछे हथलेवा छूटता है, हथलेवे में मेंहदी और रुपया होता है। बींद का हाथ नीचे बींदनी का ऊपर इस तरह दोनों के हाथ जोड़े जाते हैं। हथलेवा छूटने के वक्त बींदनी का बाप काका मामा वगेरा ऊंट घोड़ा गाय भेंस रुपया पैसा जैसा जिस से बन पड़ता है देते हैं, इस के पीछे बींद बींदनी उठ खड़े होते हैं। उस वक्त ब्राह्मण उन को अटकाता है उस को भी आठ दस रुपये देने पड़ते हैं।

फिर बींद बींदनी रथ वा गाड़ी में बैठकर या पैदल ही जान के डेरे (जनवासे) में जाते हैं, औरतें

पीछे पीछे गीत गाती जाती हैं और १ परदा खेंचे होती हैं।

बरातियों में जो बड़ा बूढ़ा होता है बींदनी का बाप उस के खोले (गोद) में अपनी लड़की को डालता है अर्थात् उस को लड़की का धर्मबाप बनाता है और उस को १) और नारयल भी इस दस्तूर का देता है। बींदनी का बाप बींदनी की खोल (गोद) भरता है यानी उस की झोली में सिंघाड़े छुहारे और दो चार रुपये डालता है फिर वहीं गठजोड़ा भी खोल दिया जाता है।

फिर बींदनी का बाप जान को २।३ भात देता है, यानी जितने दिन जान रहती है उस को सीरा लापसी रोटी मांस दारू अमल तमाकू वगैरा की मिजमानी करता है और दोनों टंक (वक्त) जान को बींद समेत अपने घर पर बुलाकर खाना खिलाता है; तीसरे दिन तीसरे पहर के वक्त जान को बुलाकर बींद के तिलक करता है, रुपया नारयल देता है, एक २ रुपया और नारयल जानियों और जान के कमीनों को भी देता है, बींद और बींद के बाप की ओढ़ावनी करता है यानी कम्मल, बनात, या खेसला उन को उढ़ाता है और डायज़ा देकर जान को रुख़सत करता है और बींदनी को भी बींद के साथ कर देता है, उस

वक्त बींद का ब्राह्मण अपना नेग मांगता है उस को भी रुपया दो रुपया दिया जाता है।

बींदनी वहली में बैठती है और बींद घोड़े पर सवार होता है। बींदनी के बाप, काका, भाई-बंद गांव के बाहर तक पहुंचाने को जाते हैं वहां जाजम बिछा कर अफ़ीम गलाते हैं और अमलपानी करके समधी समधी गले लगकर मिलते हैं, बींद घोड़े पर चढ़ता है। बींद का बाप उस वक्त ढोलियों को जो इनाम देता है उस को घुड़चढ़ी कहते हैं।

फिर बरात रवाने हो जाती हैं और अपने घर के पास पहुंच कर गांव के बाहर से ही बींद बींदनी का फिर छेड़ाछेड़ी [गठजोड़ा] बांधते हैं, औरतें घर से गीत गाती आती हैं, ढोल बजता है। यहां घर के दरवाजे पर भी तोरण बंधा होता है उस को भी बींद उसी तरह से ४ दफे बांदता [बंदन करता] है, बींद की मां आकर आरती करती है, बहन बार रोकती है उस को गाय भेंस घोड़ा जो देना होता है देकर अंदर जाते हैं।

शादी करने में बिचार।

शादी अपने गोत में नहीं होती। इंदा इंदा तो क्या इंदा और पड़िहार भी कभी आपस में शादी नहीं करते। इस के वास्ते कोई ऐसी हद या पीढ़ियों की

गिन्ती मुक़र्रर नहीं है कि जिस के पीछे आपस में शादी हो सके।

मां का गोत नहीं टालते गांव टालते हैं, यानी जिस गांव में बाप ने शादी की होगी तो उस के बेटे ३ पीढ़ी तक वहां मां के गोत में शादी नहीं करेंगे चाहे गोत कोई हो; जैसे देवरा जोत राठोड़ गांव से तरावे, नाथ-डाऊ, देवानिया, और लोहारण वगेरा में रहते हैं यदि कोई ईंदा से तरावे के देवरा जातों में अपना व्याह करेगा तो उस के बेटे का व्याह ३ पीढ़ी तक वहां तो नहीं होगा। परन्तु नाथडाऊ वा देवानिये के देवरा जातों में हो जावेगा, मतलब यह है कि सास बहू एक गोत की तो आजावेंगी मगर एक गांव की नहीं आवेंगी।

दो बहनों से एक साथ तो शादी नहीं हो सकती मगर आगे पीछे एक बहन के मर जाने पर हो सकती है।

गणायत [संबंधी] २ तरह के होते हैं इकेवड़ा, और बेवड़ा [इकहरे और दोहरे]।

इकेवड़े गनायतों के फिर २ भेद हैं, एक तो वे कि जिन को बेटी देते हैं और वे नहीं देते और दूसरे वे जिन्हें बेटी नहीं देते और उन की ले लेते हैं। इस भेद का कारण केवल जमीन है कि जिस के पास ज़ीयादा

जमीन होती है वह कम जमीन वाले की बेटी ले तो लेता है मगर उस को अपनी बेटी देता नहीं है।

बेवड़े गनायत वे हैं जो आपस में बेटी लेते देते हैं। इंदों के इकेवड़े गनायत अव्वल नम्बर के राठोड़ों में चांपावत, कूंपावत, जोधा, बीका, बीदा, ऊदावत, मेड़तिया और महेचा खांपके हैं जिन के पास बड़ी २ जागीरें हैं।

दूसरे नंबर के गनायत राठोड़ों में खोखर, बानर, कानासरिया, कोटीचा, रांदा, जे सिंह, सूंडा, धारोईयां भाटियों में मोकल, पंवारों में वे पंवार जिन के पास जमीन नहीं है और गहलोतों में आसायच हैं।

बेवड़ा गनायत राठोड़ों में देवरा जोत, गोगादे, चांहड़दे, रूपावत, पातावत, धांधल, ऊहड़ धवेचा, पोकरणा, और सिंधल हैं; भाटियों में केलण, जसोड़; सीसोदियों में गहलोत्त, मांगालिया, पंवारों में भायल और सोढा हैं; मगर भाटियों की ४ खांपों यानी रावलोत जैसा उर्जनोत, और बेरी दासोतों में बिलकुल शादी नहीं होती पहिले से तलाक डाली हुई है।

नाता ।

नाता आम तौर पर तो नहीं होता पर जो कोई कर भी लेता है तो वह बिरादरी में नीचा और नात्-रायत राजपूतों के शामिल समझा जाता है जिन में नाता होता है ।

संतान ।

ब्याही हुई औरत से जो औलाद हो वह असली समझी जाती है और घर में डाली हुई औरत की औलाद को खवासवाल कहते हैं; मगर जो किसी औरत को लड़ाई में पकड़ लावें या जो कोई रजपूतानी खुशी से अपने खाविंद को छोड़ कर घर में आजावे तो उस की और ब्याहता लुगाई की औलाद में कुछ फ़र्क़ नहीं समझा जावेगा; जैसे एक देवड़ा सरदार की ठुकरानी जो भटियानी थी खांवद के छोड़ देने से ईंदा राना ऊगमसी के पास आ रही थी उस से जो औलाद हुई वह दूसरी रानियों की औलाद के बराबर समझी गई; गोपालसर और बेलवे के ईंदा उसी भटियानी के और बालेसर के ईंदा दूसरी रानियों के पेट से हैं, पर उन में कोई फ़र्क़ किसी बात का नहीं है, शामिल हुक्का पानी पीते हैं और सगाई ब्याह भी दोनों का एकही जगह होता है । इसी तरह राव मलीनाथ जी के कंवर जगमालजी मांड के बादशाह की बेटी गींदोली को ले आये थे

उस की औलाद भी असली औलाद के बराबरही समझी गई बाड़ मेरा राठोड़ गींदोली के पेट से हैं* ।

खानपान ।

सूर नहीं खाते इस के सिवार्य और कोई रिवाज मुसलमानों से नहीं मिलता, सूर खाने की तलाक़ नाड़राव के समय से चली आती है क्योंकि जब सूर का पीछा करके पुष्कर जी में नहाने से नाड़राव का कोढ़ झड़ गया था तो उस ने सूर का उपकार मान कर पड़िहारों से सूर खाना छुड़ा दिया था ।

हुक्का तमाकू शराब पीते हैं भेड़ बकरे खरगोश हरन तिलोर तीतर और बटेर का मांस खाते हैं ।

सूरतशक्ल चालढाल ।

ईंदों की सूरत शिकल राठोड़ों से जियादा मिलती है या भाटी चौहानों से, जो मारवाड़ में रहते हैं । जैसलमेर के भाटियों से नहीं मिलती ।

---

* ऐसी ही १ मिसाल बीकानेर की तवारीख़ में भी मिलती है कि राव बीका-जी राठोड़ जब खंडिले के चौहानों से लड़ने गये थे तो वहां के राजा की बिधवा बहन उन के पास आ गई थी जिसे उन्होंने रानी करके रखी और उस से जो औलाद हुई व्याहता रानियों की औलाद के बराबर समझी गई । कई बड़े २ ठाकुर बीकानेर के हैं उसी खंडेली के बेटों की औलाद में हैं ।